Input-output Approach

प्र०- निवेशन-निर्गत दृष्टिकोण से आप क्या समझते हैं। तुलनात्मक राजनीति में इसके कार्यों से सम्बन्धित ईस्टन एवं आमण्ड के विचारों को प्रस्तुत करें।

निवेशन-निर्गत दृष्टिकोण व्यवस्था विश्लेषण से सम्बन्धित है। ~~[illegible]~~ डॉ० का० पंत ने इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है "निवेशन-निर्गत दृष्टिकोण आँकड़ों को संगठित करने उनकी संकल्पना करने, उन्हें संहिताबद्ध बनाने और उसके अन्य तरीकों का एक ढाँचा है"। संरचनात्मक कार्यात्मक दृष्टिकोण तथा निवेशन-निर्गत दृष्टिकोण का उद्देश्य राजनीतिक है। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक संदर्भ में दोनों व्यवस्था सि० के भौतिक ढाँचे से बहुत कुछ प्राप्त करते हैं जिससे रा० व्यवस्था में बुनियादी तौर पर बने रहने के रूप में स्थिति बदलती है। सम्पूर्ण निवेशन-निर्गत सि० के साथ ~~[illegible]~~ डेविड ईस्टन और आमण्ड का नाम अमर हो गया है। ईस्टन ने इस ~~[illegible]~~ दृष्टिकोण को रा० सि० की केन्द्रीभूत समस्याओं के रूप में प्रस्तुत किया है।

रा० व्यवस्था प्रवेश करती एक पुंज है जो निवेशन को निर्गतन में बदलती है। यह एक पेचीदी प्रक्रिया है किन्तु यह गत्यात्मक है और अपने लक्ष्यों को समझने में समर्थ है। रा० व्यवस्था में इनका ज्ञान होता है तथा इसके रूपान्तरण ~~[illegible]~~ से वे निर्गत के रूप में अर्थात नियमों या निर्णयों के ~~[illegible]~~ रूप में बदल जाते हैं। पुनः जिन निर्गतों (नियमों) से रा० व्यवस्था प्रभावित होती है इसी को आमण्ड और पॉवल ने पुनर्निवेशन अथवा प्रतिसंभरण (Feedback) कहा है

ईस्टन का निवेशन-निर्गतन दृष्टिकोण (Easton view on Input-output) —— दूसरे पेज पर लिखा गया है।

आमण्ड का निवेशन-निर्गतन दृष्टिकोण: —— आमण्ड ने आगत और निर्गत से संबन्धित सात चरों (Variables) का प्रयोग किया है। इनमें आगत कार्य गैर सरकारी उपव्यवस्थाओं, समाज और पर्यावरण द्वारा निष्पादित किये जाते हैं जबकि निर्गत कार्य केवल सरकार द्वारा निष्पादित किये जाते हैं। आगत और निर्गत के विश्लेषण में आमण्ड की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि उसने व्यवस्थापिका कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्यों की ओर निर्देश करके निर्गत पहलू की अवहेलना की है। उसके विश्लेषण में आगत कार्य अधिक महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। आमण्ड ने नि० नि० चार आगत चरों (Variables) का उल्लेख नि० नि० ढंग से किया है।

Scanned with CamScanner

① राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती – (Political Socialization and Recruitment) रा० समाजीकरण रा० संस्कृति में प्रवेश होने की क्रिया है और इसके फलस्वरूप व्यवस्था के सदस्यों के बीच अपनी रा० व्यवस्था के प्रति अभिवृत्तियों और विश्वासों का विकास होता है। रा० भर्ती का अर्थ है समाज के सदस्यों को उनके देश की रा० में शामिल करना।

② हित अभिव्यक्ति (Interest Articulation) – हित अभिव्यक्ति उन संगठित समूहों की मौजूदगी और भूमिका की ओर संकेत करता है जो अपने विशिष्ट हितों की रक्षा और विकास के लिए अपनी भूमिका अदा करते हैं। ऐसे हित समूह- संस्थागत, राजनीतिक, धार्मिक स्वाभाविक, व्यवसायी इत्यादि हो सकते हैं।

③ हित समूहन (Interest aggregation) :— हित समूहन उन रा० दलों की उपस्थिति और भूमिका की ओर अग्रसित करता है जो कई हितों को इकट्ठा करते हैं और ऐसे लोगों की भर्ती की व्यवस्था करते हैं जो समाज के प्रति प्रतिबद्ध हैं। दल व्यवस्था के वर्गीकरण को आमण्ड हित समूहन के अन्तर्गत मानता है।

④ राजनीतिक संचार :— (Political Communication) :— राजनीतिक संचार का अर्थ उस माध्यम से है जिसके द्वारा राजनीतिक व्यवस्था में अन्य कार्य किये जाते हैं। किसी राजनीतिक व्यवस्था में ~~अन्य कार्य किये जाते हैं कि~~ संचार सुविधाओं का बड़ा महत्व होता है, क्योंकि वे समाज और उसकी रा० व्यवस्था के विषय में सूचना के प्रवाह का निर्धारण करते हैं।

आगत चरों के अलावा आमण्ड निर्गत चरों का भी जिक्र किया है जिसने उसने, नियम निर्माण, नियम प्रवर्तन और नियम निर्णय प्रभाग कहा है। आमण्ड के अनुसार निर्गत कार्य उन सरकारी कार्यों में मिलते-जुलते हैं जिनकी व्याख्या शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त में की गई है। इन आगत-निर्गत चरों के आधार पर ही आमण्ड रा० व्यवस्था के अपने अध्ययन को व्यापक बनाता है। ~~[illegible]~~ ईस्टन की रा० व्यवस्था की तरह आमण्ड की रा० व्यवस्था भी उस सामाजिक वर्ग से संबद्ध है जिसकी अपनी विशेषताएँ हैं किन्तु जिसके अध्ययन में अन्य विषयों की संकल्पनाएँ और सि० अत्यधिक उपयोगी हो सकते हैं।

ईस्टन का निवेशन-निर्गत दृष्टिकोण :— ईस्टन पहला रा० शास्त्री है जिसने रा० व्यवस्था के विश्लेषण में निवेशन और निर्गत के रूप में एक क्रमबद्ध ढाँचे का विकास किया है। रा० व्यवस्था को और स्पष्ट बनाने के लिए उसने इसके तीन तत्वों का विस्तार से वर्णन किया है। इन्हीं तत्वों के कारण रा० व्यवस्था सक्रिय होती है। माँगों, समर्थनों, एवं पुनः निवेशनों के रूप में ईस्टन के आगत-निर्गत विश्लेषण के नि० लि० तीन प्रमुख चरण हैं।

Scanned with CamScanner

1. माँगें (Demands) :— ईस्टन के अनुसार व्यक्ति या समूह अपनी आवश्यकताओं की माँग करते हैं, जो उनके निहित हितों को पूरा करती हैं। इस प्रकार आवश्यकताओं की माँग तनाव को जन्म देती है, ऐसे तनाव का भार परिवर्तनात्मक कार्यक्रम अथवा गुणात्मक तत्वों के भार के कारण बहुत अधिक हो जाता है। ईस्टन के अनुसार इन कसौटियों, नीतियों ने अधिकार की स्थिति बन जाती है। इस प्रकार इन आवश्यकताओं की संरचनाओं का अन्तर्गत माँगों को किसी सही तौर पर व्यक्त किया जाता है, प्रमाणीकृत निर्णयों के रूप में जिसे सही तौर पर निर्णय कहा जाता है, परिवर्तित करता है। अतः परिवर्तन प्रक्रिया में कुछ माँगे पूरी की जाती हैं, और कुछ को बाहर निकाल कर छोड़ दिया जाता है, क्योंकि राजव्यवस्था का संचालन इस तरीके से होता है कि स्थायित्व बना रहे।

2. समर्थन (Support) :— समर्थन का लक्षण आगतों से होता है। यह व्यवस्था और इसके प्रतिरूप के बीच बने हुए आगत लेन-देन को निर्देशित करता है। यह प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार का हो सकता है। समर्थन तब होता है जबकि कार्य स्पष्ट रूप से और पूर्ण रूप से समर्थक हों, यह परोक्ष उस समय होता है जबकि राजनीतिक अभिवृत्तियों को यह निर्देश करता है। यदि राजनीतिक समर्थन में किसी प्रकार की कमी हो जाये तो और तरीकों का सहारा लिया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर संरचनात्मक निर्णय की व्यवस्था के संरचनात्मक तत्वों में परिवर्तन करके प्रतिस्थापित कर लेना चाहिए। प्रतिनिधि व्यवस्था परिवर्तित या दल-प्रणाली में परिवर्तन करने को इस बारे में स्पष्ट उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है। ईस्टन के अनुसार एक और तरीका समर्थन पैदा करने का है जो लोगों में सद्भावना के विकास के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं के विकास के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं के इस्तेमाल की ओर निर्देश करता है।

3. पुनः निवेश (Feed-Back) :— ईस्टन के अनुसार किसी राजव्यवस्था के विभिन्न भागों की व्यवस्था, ये नेताओं की प्रमाणीकृत निर्णय और कार्य हैं। जिनका प्रभाव इसके घटकों पर पड़ता है। ये निर्गत न केवल समाज में घटनाओं को प्रभावित करने में सहायता पहुँचाते हैं। बल्कि ऐसा करते हुए वे आगत की इकाई बाद एक अन्य भावी परिणाम निर्धारित करते हैं, जो इस व्यवस्था में बढ़ सकते हैं। इससे एक पुनर्निवेश फंदा (Feedback Loop) होता है, जिसकी सहायता से अधिकारी इन प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करने में मदद करता है जिसके भीतर व्यवस्था को तनाव का सामना करना पड़ सकता है। व्यवस्था के अन्दर क्या हो रहा है, इसके बिना ही इन्हें पुनः निवेश संभव नहीं है, और ईस्टन के अनुसार ऐसा करना अधिकारियों द्वारा अर्जित के नीति में संभावना होता। पुनः निवेश से जो कुछ होता है उससे व्यवस्थाओं को तनाव का का मुकाबला करने और अपने लिए समर्थन रखने की क्षमता पर गहरा असर पड़ता है।

Scanned with CamScanner

ईस्टन द्वारा प्रतिपादित आगत-निर्गत दृष्टिकोण के उपर्युक्त विश्लेषण से यही प्रतीत होता है कि एक व्यवस्था का प्रतिमान प्रक्रिया की गतिविधियों से होता है जो इसकी प्राप्ति में होती और समर्थनात्मक मांगों के निर्गतों के रूप में प्रकट होती है। इस प्रकार ईस्टन के आगत-निर्गत दृष्टिकोण की राजनीति में प्रयोग किया जा सकता है जिसमें एक पद्धतिगत प्रवाह का प्रतिमान प्रस्तुत किया गया है। एक जीवन की पद्धति विश्लेषण को प्रस्तुत करने की योजना के आधार पर ईस्टन ने आगत-निर्गत सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

मूल्यांकन — आगत-निर्गत दृष्टिकोण की भी कुछ विद्वानों (?) आलोचना की गई है। आलोचक निम्नलिखित मान्यताओं से इस दृष्टिकोण की आलोचना करते हैं।

(1) आलोचकों के अनुसार इस दृष्टिकोण में राज्य की दूसरी धारणाओं से पारिभाषिक शब्दावली उधार लिया गया है, जिसका संबंध प्राकृतिक विज्ञानों से है। ईस्टन ने आगत-निर्गत पद्धति पर इतना अधिक बल दिया है कि एक व्यवस्था को अनुकूल प्रतिमान एक जीव के संक्षिप्त दृश्य का रूप धारण कर लेती है। यह भी देखा जाता है कि इस दृष्टिकोण में सत्ता और प्रभाव से सम्बन्धित घटना की कोई विशेष प्रक्रिया इस दृष्टिकोण में नहीं है। यंग ने ठीक ही कहा है "यह दृष्टिकोण अमूर्त शब्दों में व्यवस्था के परिचालन पर ध्यान केंद्रित करता है न कि मानवीय व्यवहार प्रतिमान पर"।

(2) आगत-निर्गत दृष्टिकोण का प्रयोग मतदान, राजनीतिक अभिजातों के निर्णय, आन्दोलनों प्रदर्शनों, हड़ताल, बन्द, घेराव जैसी सामूहिक एक घटनाओं के अध्ययन के संदर्भ में नहीं किया जा सकता। मैकरीडिस (?) के शब्दों में "आभासी रूप से इस दृष्टिकोण को लागू नहीं किया जाता"।

(3) इस दृष्टिकोण के विरुद्ध यह भी आरोप लगाया जाता है कि यह दृष्टिकोण यथास्थिति को बनाये रखने के पक्ष में है। यंग ने कहा है कि "आगत-निर्गत विश्लेषण में हल होने (?) प्रक्रिया को एक और राजनीतिक व्यवस्था के विघटन के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। परिवर्तन संबंधी जो सामग्री इसमें शामिल की गई है उसका संबंध आंशिक आकस्मिक और विकृत परिवर्तनों से नहीं होता। इसलिए कहा जाता है कि यह दृष्टिकोण अनुदार है क्योंकि इस तथ्य की अवहेलना की गई है कि सारी व्यवस्था कभी स्थिर नहीं होती। इसमें हमेशा तनाव और विरोध भी होते हैं।

उपर्युक्त आलोचनाओं के आधार पर यह दृष्टिकोण अनुदार, परिवर्तन-विरोधी और सबसे अधिक अव्यावहारिक है। फिर भी इस दृष्टिकोण की यह खूबी है कि इसे अनुभविक, एक अनुसंधान में बड़े पैमाने पर इसका प्रयोग नहीं किया गया है। आज भी इस दृष्टिकोण की अमूर्तता को ऐसे स्तर पर सीमित किया गया है कि इसे किसी विशेष प्रकार की एक व्यवस्था के साथ संबंध होने या सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ के किसी खास प्रकार के साथ जुड़ जाने का खतरा नहीं है।